By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

B.A. History
Part - I
Paper - I
Date : 24.05.2020

सिकन्दर के भारत पर आक्रमण के प्रभावों का वर्णन

(Describe the effects of Alexander's invasion on India.)

सिकन्दर विदेशी मेसीडोनियन था। उसने भारत पर आक्रमण कर भारत के अनेक राज्यों पर अधिकार कर लिया था। अतः उसके आक्रमण का भारतीय इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा, इस विषय में विद्वानों के मतभेद में भिन्नता है। बहुत से यूरोपीय इतिहासज्ञ इसको युगान्तकारी घटना मानते हैं। परन्तु दूसरी ओर अनेक इतिहासज्ञ इस आक्रमण के विषय में कहते हैं कि वह एक आँधी के वेग की भाँति आया और पानी के बुलबुले की भाँति उनका अंत हो गया। डा० स्मिथ महोदय का कथन है कि "भारत अपरिवर्तित रहा। युद्ध का घाव शीघ्र भर गया। जैसे ही बैलों तथा उसके संतोषी किसानों ने अपने-अपने अवरुद्ध कार्यों को प्रारम्भ किया, वैसे ही विनिहत क्षेत्र पुनः लहलहा उठे और वह स्थान जहाँ असंख्य नर हत्यायें हुई थी, पुनः असंख्य प्राणियों से परिपूर्ण हो गया। भारत पर ग्रीकों का प्रभाव नहीं पड़ा। भारत अपना भव्य एकाकी जीवन बीता रहा था। शीघ्र ही यूनानी तूफान को भूल गया। हिन्दू-बौद्ध अथवा जैन किसी भी भारतीय लेखक ने सिकन्दर या इसके नाम-पात्र का संकेत नहीं किया। डा० राधाकुमुद मुखर्जी भी इसी विचार से सहमत हैं। उन्होंने लिखा है कि — "यह साहसिक कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय था; परन्तु इसे कोई महान

सफलता का कार्य नहीं माना जा सकता क्योंकि सिकन्दर को हिन्दुस्तान के किसी भी महान सम्राट का सामना नहीं करना पड़ा। यह आक्रमण राजनैतिक दृष्टि से भी सफल नहीं रहा क्योंकि इसके फलस्वरूप पंजाब मकदूनिया के लोगों के अधिकार में स्थायी रूप से परिवर्तन नहीं आया और जनता के साहित्य, संस्कृति तथा शासन प्रणाली पर उसकी छाप नहीं पड़ी।

लेकिन डा० हेमचन्द्र चौधरी, मजुमदार साहब डा० रामशंकर त्रिपाठी और श्री चन्द्र विद्यालंकार आदि इतिहासज्ञों के मतानुसार :- सिकन्दर के आक्रमण का भारत पर प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में अवश्य ही पड़ा :- प्रो० नील कांत शास्त्री ने भी लिखा है कि "यद्यपि यह आक्रमण 24 महीने से कम रहा, परन्तु यह एक ऐसी घटना थी कि चीजें जैसी थी, वैसी न रह सकी। इससे सिन्धु नदी के पास की जातियों को निर्बल बनाकर मौर्य शासक के लिए सरलतापूर्वक राज्य के विस्तार के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया। इसने इस बात को सिद्ध कर दिया कि भारतीय शासक को अधिक बुद्धिमतापूर्ण राजनीतिक नीति की आवश्यकता है।"

—— : राजनीतिक प्रभाव : ——

(1) इस आक्रमण ने भारतीयों को राजनीतिक एकता का पाठ पढ़ाया। भारत के लोग यह भली भाँति जान गये कि आपसी फूट की वजह से ही भारतीयों की हार हुई। फिर भी आक्रमण ने यह सिद्ध कर दिया कि किसी देश के अनेक भागों में बंटे छोटे-छोटे राज्य किस तरह से संगठित शक्ति के सामने धराशायी हो जाते हैं।

(ii) इस आक्रमण के फलस्वरूप भारत के उत्तर पश्चिम भागों में यूनानी नगर तथा बस्तियाँ स्थापित हो गई; जिसका फल यह निकला कि शासन के क्षेत्र में क्षेत्रीय व्यवस्था चल पड़ी।

(iii) सिकन्दर ने अपनी विजय की स्मृति में कई नगर भी स्थापित किए जो उसके मृत्यु के बहुत दिनों बाद तक बने रहे।

(iv) इस आक्रमण के फलस्वरूप ही भारत छोटे-छोटे राज्यों का अंत हो गया जिससे चन्द्रगुप्त मौर्य को एक विशाल साम्राज्य स्थापित करने का मार्ग मिल गया।

(v) यूनानियों के सैन्य संचालन तथा संगठन का भी भारतीयों पर अवश्य प्रभाव पड़ा। लेकिन डा० स्मिथ का मत है कि — "Even the Military Indians showed no disposition to learn the lesson taught by the sharp sword of Alexander. The king of Hind preferred to go in the old way trusting to their elephants and chariots supported by enormous hosts of infantary. He never mastered the shock the tactic of Alexander."

ऐतिहासिक लाभ:

सिकन्दर केवल अपने वीर सैनिक के साथ ही भारत नहीं आया था बल्कि उसके साथ अनेक लेखक और विद्वान भी भारत आये थे जिन्होंने आँखों देखा हाल राजनीतिक, भौगोलिक, सामाजिक और

धार्मिक दशा का वर्णन किया है। इन वर्णनों में हमें अपने देश का इतिहास जानने में बड़ी मदद मिली।
(ii) इस आक्रमण से भारत के प्राचीन इतिहास को जानने में बड़ी सहायता मिली है। यह आक्रमण भारत पर 327 ई० पूर्व में हुआ था। इसी तिथि के आधार पर भारत का क्रमानुसार इतिहास लिखने में कोई दिक्कत नहीं हुई। अतः इस आक्रमण से ऐतिहासिक लाभ भी हुआ।

— : व्यापार तथा वाणिज्य पर प्रभाव: —

(i) इस आक्रमण से पहले भी यूनानी और भारत में व्यापारिक संबंध था लेकिन इस आक्रमण से दोनों का व्यापारिक संबंध और भी अधिक दृढ़ हो गया। इस आक्रमण ने दोनों देशों के बीच सामुद्रिक तौर पर स्थल मार्ग खोल दिये, जिससे दोनों देशों के बीच अब खुलकर व्यापार होने लगा।
(ii) इसी व्यापारिक आदान-प्रदान के फलस्वरूप यूनानी शैली के चाँदी के सिक्के चलाये गये।

— : साँस्कृतिक प्रभाव : —

यूनानियों के दार्शनिकों ने भारतीयों से आत्मा, पुर्जन्म और कर्म संबंधी सिद्धांतों को सीखा। यूनानी दार्शनिक पैथागोरस की कृतियाँ इस बात की साक्षी है। इस संबंध में John Irwin महोदय का कथन है:- There is more of Roman than of Greek influence in Gandhara school of art which died down in third century